हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G. II sem

विषय — आलोचना की प्रमुख पद्धतियाँ —

यह तो स्पष्ट है कि आलोचना कभी किसी रूप में और कभी किसी रूप में सामने आती है। प्रत्येक व्यक्ति की रुचि और प्रकृति अलग-अलग होती है। इसी से प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिक्रियाएँ भिन्न होती है, और उसके द्वारा अपनाई गयी आलोचना की पद्धति भी स्वतः ही भिन्न होती है। वस्तुतः आलोचना के रूप साहित्य की विकास की धारा पर आधारित रहते हैं। यही कारण है कि युग विशेष की मांग के आधार पर सदैव नयी-नयी आलोचना पद्धतियाँ जन्म लेती रहती हैं। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक हम ऐसी अनेक आलोचना पद्धतियों को देखते हैं। कभी टीका पद्धति का प्रचलन था, तो कभी दो प्रमुख रचनाओं की तुलना करने की पद्धति प्रचलित थी, और कभी व्याख्या के द्वारा आलोचना की जाती थी। आधुनिक

युग विविधताओं का युग है। साहित्य के क्षेत्र में आज पर्याप्त विभिन्नता दिखाई देती है। छायावादी कविता से पूर्व आलोचना की जो पद्धतियाँ प्रचलित थीं, वे छायावाद और छायावादोत्तर युग में न केवल परिवर्तित हुई हैं, अपितु अनेक रूपों में भी सामने आई हैं। आज जो नयी समीक्षा का प्रचलन बढ़ रहा है, वह नयी कविता और नयी कहानी की देन मानी जा सकती है।

आलोचना की जो पद्धतियाँ हिन्दी में प्रचलित हैं, वे अधिकांश ऐसी हैं जो पाश्चात्य आलोचना पद्धतियों से मेल खाती हैं। आलोचक कवि और पाठक के बीच माध्यम का कार्य करता है। अतः उसका दोनों के प्रति उत्तरदायित्व है। कवि के भाँति वह द्रष्टा और स्रष्टा दोनों ही होता है। लोक-व्यवहार तथा शास्त्र का ज्ञान, प्रतिभा और अभ्यास आदि साधन जैसे कवि के लिए अपेक्षित है, उसी प्रकार आलोचक के लिए भी हमारी दृष्टि से कवि के प्रति सहृदयता और श्रद्धा, प्रतिभा, अन्तर्दृष्टि, निष्पक्षता, तुलनात्मक दृष्टिकोण

शब्द-शक्तियों का ज्ञान, साहित्यिक आलोचना के मानदण्डों का परिचय, विद्वत्ता आदि कुछ महत्वपूर्ण अंग हैं जिनका आलोचना में होना परम आवश्यक है।

पाश्चात्य विद्वानों ने आलोचना पद्धतियों का विभाजन अनेक प्रकार से किया है। सामान्यतः आलोचना की दो ही पद्धतियाँ प्रमुख हैं:— सैद्धान्तिक आलोचना और व्यावहारिक आलोचना। सैद्धान्तिक आलोचना के अन्तर्गत काव्य-~~शास्त्र~~ शास्त्रीय मूल्यों का निर्धारण के अलावा साहित्य की अनेक विधाओं के स्वरूप का विवेचन प्रस्तुत किया जाता है। व्यावहारिक आलोचना में प्रमुख रूप से दो भेद किए गये हैं — शास्त्रीय समीक्षा और स्वतंत्र वैज्ञानिक प्रणाली पर की जाने वाली समीक्षा।

पाश्चात्य आलोचना के अन्तर्गत प्रभावात्मक अथवा भाव-प्रधान या आत्मप्रधान आलोचना को ही महत्व प्राप्त है। अंग्रेजी साहित्य में 'पीटर' नामक आलोचक को उसका प्रमुख प्रवर्तक माना जाता है। सैद्धान्तिक आलोचना भी प्रभावात्मक आलोचना की तरह ही पाश्चात्य आलोचना पद्धतियों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

हिन्दी आलोचना में आज अनेक पद्धतियाँ प्रचलित हैं। ये आलोचना पद्धतियाँ निम्नलिखित हैं :—

(1) सैद्धान्तिक आलोचना,
(2) व्यावहारिक आलोचना,
(3) प्रभावात्मक आलोचना,
(4) व्याख्यात्मक आलोचना,
(5) शास्त्रीय आलोचना,
(6) मनोविश्लेषणात्मक आलोचना,
(7) ऐतिहासिक आलोचना,
(8) प्रगतिवादी आलोचना,
(9) चरितमूलक आलोचना,
(10) निर्णयात्मक आलोचना,
(11) संस्कृतिक आलोचना
(12) अस्तित्ववादी आलोचना।

ये सभी आलोचना पद्धतियाँ आधुनिक हिन्दी आलोचना में किसी न किसी रूप में प्रचलित हैं।